श्यामपट्ट का प्रयोग

अध्यापक को कहानियों को उपयुक्त विभागों में विभाजित कर लेना चाहिए। परन्तु इस विभाजन के विषय में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि विभाजन करते समय कहानी का क्रम न टूट जाए।

अध्यापक को चाहिए की प्रत्येक भाग या अन्वय अन्विति कह लेने के पश्चात् कतिपय शब्दों की सहायता से उस भाग का सारांश श्यामपट्ट पर लिख दे। यह सारांश प्रश्नों द्वारा छात्रों की सहायता से लिखना चाहिए। सारांश ~~शब्द~~ अल्प शब्दों तक ही सीमित होना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

परन्तु यह ध्यान रहे की इस कार्य द्वारा कथा-प्रवाह में बाधा न पड़े। इस सारांश के पश्चात अध्यापक कहानी का दूसरा भाग प्रारम्भ कर देगा। सारांश देने की एक अन्य पद्धति भी है। इसके अनुसार अध्यापक कहानी कहने के साथ-साथ उसकी मुख्य बातों को श्यामपट्ट पर ~~सारांश भी~~ लिखता रहता है। इस प्रकार कहानी कहने के साथ-साथ श्यामपट्ट पर सारांश भी तैयार होता जाता है और उसके लिखने के लिए अध्यापक को छात्रों को निर्देश दे देना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ अध्यापकों का विचार है कि पूरी कहानी कहने के पश्चात अध्यापक को प्रश्नों द्वारा छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट पर सारांश लिखना चाहिए। इससे लाभ यह होता है कि कहानी का क्रम नहीं टूटता है और बालकों द्वारा ग्रहण किये हुए ज्ञान की भी परीक्षा हो जाती है तथा अध्यापक को भी अपनी सफलता का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार तैयार किये हुए सारांश को छात्रों को लिखा देना चाहिए। तत्पश्चात अध्यापक उन रूपरेखाओं को बालकों से विकसित करवा सकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

सारांश के अतिरिक्त श्यामपट्ट का प्रयोग अनुचित या श्यामपट्ट - आकृति बनाने तथा स्थूल वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। अध्यापक को किसी कठिन बात को समझाने के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। परन्तु श्यामपट्ट का प्रयोग करने में अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1- शिक्षक श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय इसको ढक ना लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से अनुशासन भंग होने का भय रहता है। इसको कक्षा में अपनी पीठ नहीं दिखानी चाहिए, उसको 45° के कोण से खड़ा होकर लिखना चाहिए।

2- श्यामपट्ट - लेख सुस्पष्ट, सुन्दर तथा स्थूल-सा होना चाहिए, जिससे वह पूरी कक्षा को दिखाई दे सके। दूसरे, इस स्तर के छात्रों में अनुकरण-प्रवृत्ति प्रबल होती है। यदि अध्यापक का लेख सुन्दर नहीं होगा तो वे भी अच्छा लिखने का प्रयत्न नहीं करेंगे। इसलिए उसे सुन्दर तथा स्वच्छता के साथ लिखना चाहिए।

3- श्यामपट्ट पर रेखाचित्र, चित्र, समय-रेखा इत्यादि इस प्रकार बनाये जायें कि वे पूरी कक्षा को दिखाई पड़े, अर्थात उनका आकार कक्षा के अनुपात में हो।

4- श्यामपट्ट पर लिखने के पश्चात कक्षा का निरीक्षण भी करना चाहिये जिससे बालकों की अशुद्धियों का पता चल सके।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डवपुर, ताखा, इटावा

इतिहास - शिक्षण में क्रियाशीलता की आवश्यकता

किसी भी स्तर पर इतिहास-शिक्षण ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसमें अध्यापक ही कार्यरत रहे और छात्र निष्क्रिय बने रहें। वे केवल निष्क्रिय श्रोता ही न बने रहें, वरन् इतिहास-शिक्षण में क्रियाशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। जब तक बालक पठन-पाठन में सक्रिय सहयोग न देंगे तब तक वह शिक्षा उपयोगी नहीं होगी। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इतिहास की शिक्षा को किस प्रकार सक्रिय बनाया जाय? उसको सक्रिय बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का प्रयोग अध्यापक को इतिहास के शिक्षण में करना चाहिए

(1) - कभी - कभी कहानियों को पहेली तथा समस्याओं के रूप प्रस्तुत करना चाहिए और उनके सम्बन्ध में प्रश्न पूछे जाने चाहिए।

(2) - अभिनय - कला का प्रयोग भी इस स्तर पर किया जाना चाहिए। जिस प्रकार छोटे बच्चे कहानी कहने या सुनने में रुचि लेते हैं, उसी प्रकार वे स्वयं क्रिया करने में भी आनन्द लेते हैं। इसी तथ्य के फलस्वरूप इस स्तर पर अभिनय अधिक सफल होता है।

(3) इस स्तर पर हस्तकला का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। हस्तकला द्वारा बच्चा अपने भावों को व्यक्त कर सकता है। इसके द्वारा इतिहास का शिक्षण रोचक बनाया जाता है, और वह बालकों में कल्पना-शक्ति को विकसित करने में अत्यन्त सहायक होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

10-9-2020